गोपाल राजू
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की–247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

क्यों वर्जित है भाद्र–शुक्ल–चतुर्थी चन्द्र दर्शन

हिन्दू धर्म में मान्यता चली आ रही है कि भादौं मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को चन्द्रमा के दर्शन करने से **घार** कलंक लगता है। इसीलिए इसे कलंक चतुर्थी कहा जाता है और आज भी वर्ष में एक बार चन्द्रमा के दर्शन नहीं किए जाते।

विघ्नविनाशक और रिद्धि–सिद्धि दाता गणपति की उत्पत्ति भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी को हुई थी। एक बार चन्द्रमा गणपति जी की बड़ी तोंद देख कर उपहास स्वरुप उन पर हस दिए थे। क्रोधित होकर देव ने चंद्रमा को श्राप दिया था कि जो कोई भी तुम्हें देखेगा तो वह कलंकित हो जाएगा। चंद्रमा द्वारा क्षमा–याचना करने पर वह श्राप मुक्त तो हो गए परन्तु एक श्राप यथावत बना रहा कि वर्ष में एक बार जो कोई भी चंद्रमा के दर्शन करेगा, वह कलंक से वंचित नहीं रह पाएगा। तब से आज तक इस दिन चंद्रमा दर्शन को निषेध माना जाता है।

इतिहास साक्षी है कि इस चतुर्थी के चंद्र दर्शन मिथ्या कलंक से लोगों में ही नहीं श्री कृष्ण भगवान तक पर सत्राजित् द्वारा स्यमंतक मणि को हथियाने का कलंक लगा दिया गया था। मिथ्या कलंक विषय पौराणिक और शास्त्रोक्त ही नहीं, वैज्ञानिक और विवेचनात्मक भी ह।

कलंक चतुर्थी को चंद्र और सूर्य गोचरवश ऐसे कक्षा में अवस्थित होते हैं जिस दिन प्राण शक्ति और मनःस्थिति का सर्वाधिक वैषम्य होता है। अपने चारों ओर प्राणशक्ति वर्षाने वाली किरणों में साथ–साथ जहरीली, मारक और घातक किरणों की भी सत्ता होती है। हमारी पृथ्वी की ओर सूर्य का एक भाग ही सदैव नहीं होता भ्रमण के समय प्रतिपल बदलता रहता है। यहो स्थिति चंद्र पिण्ड की है। सदियों पहले अपने प्रज्ञा ज्ञान से ऋषि–महर्षियों ने पता लगा लिया था कि विशेष रुप से भाद्रपद्र शुक्ल चतुर्थी को चंद्रमा की चौथी कला का सूर्य भी यह घातक किरणें प्रकाशित करता है और फलस्वरुप चंद्र–सम्म्त मन भी विकृत विचार–तरंगों से प्रभावित हो जाता है।

अपनी–अपनी श्रद्धा तथा सामर्थ्य के अनुसार इस दिन लोग सोने, चांदी, तांबे, मिटटी की प्रतिमा बनाकर पूजा अर्चना करते हैं। ऋद्धि–सिद्धि के लिए आप भी इस दिन एक सरल सा उपाय कर सकते हैं। पूरे वर्ष प्रभु की आप पर कृपा बनी रहेगी। यह उपाय उन भवनों के लिए विशेष रुप से उपयोगी है जहां वास्तु दोष के कारण उन्नति, धन की वृद्धि में निरंतर बाधाएं आ रही हैं।

दिल्ली के शुक्राचार्य पंचाग के अनुसार 11 सितंबर 2010 को कलंक चतुर्थी आ रही है। इससे पूर्व आप एक चांदी का सिक्का उपलब्ध कर लें। सामर्थ्य न हो तो कोई भी धातु का सिक्का ले लें। इसके ऊपर पूजा में प्रयुक्त होने वाली एक साबुत सुपारी रखकर कलावे से बांध दें। इस विग्रह

को स्वच्छ कटोरी में चावल का आसन बनाकर स्थापित कर दें। कटोरी को जल से भरें और किसी मिटटी के पात्र अथवा कलश पर रख कर इसको भवन के उत्तर–पूर्वी कोने में किसी स्टूल, तिपाही आदि पर श्रद्धा से रख दें। प्रत्येक चतुर्थी को कलश का जल बदल दिया करें। तदन्तर में यदि नित्य संभव न हो सके तो प्रत्येक सोमवार को गणपति स्वरुप मानकर इस विग्रह पर एक दूर्वा चढा दिया करें।

भाद्रपद की इस चतुर्थी को चंद्र दर्शन न करें। विशेष रुप से विवाह योग्य कन्याएं चंद्र को देखे बिना चंद्र को अर्घ्य दें। यदि चंद्र दर्शन हो भी जाए तो निम्न चौपाई सात बार पढ़ लें।

सोम राजा सोम रानी,
कहू चौथ चंद्रमा री।
कोणी, मारे देवे अमृत ताल,
उनपर पड़े जो झूठा जाल।।

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
Website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com